झारखंड में 1857 ई० की क्रांति में जनसाधारण की भूमिका: एक ऐतिहासिक अवलोकन

पीएच० डी० पंजीयन हेतु प्रस्तुत शोध–प्रबंध का सार

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

(सामाजिक विज्ञान संकाय)

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद (झारखंड)

2023

शोध–निर्देशिका

डॉ० माधुरी कुमारी

सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
बोकारो स्टील सिटी महाविद्यालय, बोकारो
(झारखंड)

शोधार्थी

उम्मे हबीबा

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल
विश्वविद्यालय, धनबाद (झारखंड)

भूमिका (Introduction):

1857 ई० की क्रांति ने आधुनिक भारत के इतिहास में अपना एक अलग विश्वव्यापी छाप छोड़ा है। यह क्रांति ज्वालामुखी की तरह अचानक से विस्फोट हुई व लगभग दो वर्ष के अंदर ही खत्म हो गई। मगर कोई भी क्रांति यूं ही अचानक नहीं होती इनके पीछे अनेक कारण होते हैं। भारत में भी 1857 ई० की क्रांति के पीछे अनेक कारण थे जो धीरे–धीरे सुलगते हुए अचानक विस्फोट बन गया व लगभग पूरे भारतवर्ष को अपने लपेट में ले लिया। 1757 ई० में प्लासी की लड़ाई तथा 1764 ई० में बक्सर की लड़ाई के साथ ईस्ट इंडिया कंपनी में राजनीतिक प्रभाव की शुरुआत हुई जो 1857 ई० की क्रांति के बाद भारत को ब्रिटिश ताज में शामिल के साथ खत्म हो गई। भारत के आधुनिक इतिहास में 1857 ई० में घटित क्रांति ने ना केवल भारतीय उपमहाद्वीप को प्रभावित किया अपितु विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में भी इसका असर देखा गया जो अत्यधिक महत्वपूर्ण था।

1857 ई० की महान क्रांति का इतिहास किसी भी विदेशी या स्वदेशी ग्रंथकारों ने स्पष्ट रूप से नहीं लिखा, अतः क्रांति के स्वरूप व प्रकृति को लेकर लोगों में विलक्षण व भ्रामक दृष्टि का जन्म हुआ। इस भ्रम के जन्म के कई अंग्रेजी लेखक उत्तरदायी हैं जिनमें से कुछ ने तो घटनाओं का विवरण मात्र ही दिया तो कुछ ने क्रांति का इतिहास पक्षपात युक्त बुद्धि से प्रवृत्त होकर लिखा। उन्होंने पूर्वाग्रह से ग्रसित होने के कारण क्रांति के वास्तविक तत्वों को या तो देखने ही नहीं दिया या इन्हें देख कर भी अनदेखा व जानकर भी अनजान बने रहे। भारत के स्वतंत्र इतिहासकारों, अंग्रेजी लेखकों, समाज सुधारकों, क्रांति के अग्रणी नेता सहित अनेक लोगों ने अपने विचार बुद्धि व तर्क से इसकी विवेचना अलग–अलग तरीके से किया। **सर जॉन रॉबर्ट सीली** (अंग्रेजी उदारवादी इतिहासकार), कुछ समकालीन भारतीय विद्वानों **मुंशी जीवनलाल**, **मोइनुदीन** (जो उस समय दिल्ली में उपस्थित थे), **दुर्गादास बंधोपाध्याय** (बरेली), **सर सैयद अहमद खाँ** ने (1857 ई० में बिजनौर में शहर अमीन थे) क्रांति के स्वरूप को सैनिक विद्रोह माना है। (ग्रोवर, 2018, 183)[1]। **विनायक दामोदर सावरकर** (बंधोपाध्याय, 2019, 175)[5], **अशोक मेहता**, **बैंजामिन डिजरैली**, **सुरेंद्र नाथ सेन** आदि विद्वानों ने क्रांति के स्वरूप को राष्ट्रीय स्वरूप माना है। (पांडे, 2014, 137)[4]। अनेक महान इतिहासकारों, राजनीतिज्ञयों, समाज सुधारकों का मानना है कि 1857 ई० की क्रांति सैनिक स्वरूप, जातीय वर्ग, सामंती व्यवस्था व पूँजी व्यवस्था से अलग एक जन आंदोलन था व इस क्रांति में जनसाधारण की भूमिका व सहयोग मानते हुए सबसे बड़ा व व्यापक राष्ट्रीय आंदोलन माना है तथा

यही शोध रूपरेखा का विषय भी है। **मौलाना अबुल कलाम आजाद**, **शशि भूषण चौधरी** (ग्रोवर, 2018, 198)[1], **विपिन चंद्र** (चंद्र, 2015, 147)[2] आदि विद्वानों ने अपने तर्क बुद्धि की विवेचना करते हुए क्रांति के स्वरूप को जन आंदोलन माना है। अधिकांश इतिहासकार क्रांति के सूत्रपात का श्रेय **मंगल पांडे** व नेतृत्वकर्ता दिल्ली के अंतिम मुगल बादशाह **बहादुर शाह जफर द्वितीय** (28 सितंबर, 1837– 1 नवम्बर, 1858) को देते हैं। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, कानपुर से नाना साहब व तॉत्या टोपे, लखनऊ से हजरत बेगम महल, जगदीशपुर एवं पटना से बाबू कुंवर सिंह (जगदीशपुर के राजा) आदि क्रांति की अगुवाई कर रहे थे। इनके नाम सर्व प्रचलित क्रांतिकारियों में हैं। उपर्युक्त विद्वानों व ग्रंथकारों ने क्रांति के मुख्य नेतृत्वकर्ता वीरों–वीरांगनाओं का उल्लेख किया है, परंतु इनके नेतृत्व में सम्मिलित जनसाधारण जिन्होंने निःस्वार्थ भाव से सम्मिलित होकर क्रांति को आगे बढ़ाया उनका उल्लेख नहीं किया है। अतः इस शोध रूपरेखा का मुख्य ध्येय जनसाधारण की भागीदारी का उल्लेख करना है। तत्कालिन बिहार और आज के **झारखंड** में 12 जून, 1857 ई० देवघर जिला के रोहिणी गाँव से क्रांति का श्री गणेश माना जाता है परंतु 2 अगस्त, 1857 ई० रांची से घटित क्रांति ने इतिहास में नई स्वरूप प्रदान करते हुए आमजनों की भूमिका को स्पष्ट रूप से उजागर किया है जिसमें किसी बड़े राजवंश या राजा के नेतृत्व में न लड़कर आम जनता के मध्य से वीर नायक जैसे जय मंगल पांडे, माधव सिंह जमादार, सूबेदार नादिर अली के नेतृत्व में रांची डोरंडा को पूर्ण रूप से अपने कब्जे में ले लिया। बड़का गाँव के ठाकुर विश्वनाथ शाही, पांडे गणपत राय, घाटवालों का नेता लूथर सिंह, रूप मांझी, भूई टिकैत, संबलपुर के नेता शेख पंचकोढ़ी, रतनजिया का रामरूप सिंह, जसपुर के शेख पहलवान तथा दुखु आदि ने आम जनता के नेतृत्व में इस क्रांति को गति प्रदान किया।

चतरा में क्रांति के नायक जय मंगल पांडे एवं नादिर अली थे। जय मंगल पांडे रामगढ़ बटालियन के सैनिक थे और उनके निर्देश में डोरंडा में सैनिक क्रांति हो चुकी थी। 2 अक्टूबर, 1857 ई० को जय मंगल पांडे एवं नादिर अली के सैनिकों तथा मेजर इंग्लिश के बीच चतरा में युद्ध हुआ जिसमें पराजित होने के बाद 4 अक्टूबर, 1857 ई० को चतरा के पंसीहारी तालाब के पास आम के पेड़ से लटका कर इन दोनों को फांसी दे दी गई। पलामू में इस क्रांति के नायक नीलांबर–पीतांबर बंधु थे। इन्हें 28 मार्च, 1858 ई० को गिरफ्तार कर लेस्लीगंज में आम के पेड़ के नीचे फांसी दे दी गई। सिंहभूम में 1857 ई० की क्रांति पोरहाट के राजा अर्जुन सिंह के नेतृत्व में हुई जिसमें हो, मुण्डाओ,

मानकियों आदि जनजाति के नेताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। (विरोत्तम, 2017, 131)[10]।

आदिवासी क्षेत्रों पर अधिकार के प्रयास व आदिवासी शासकों को नियंत्रित करने के प्रयास के साथ–साथ ब्रिटिश नियमों–कानूनों को थोपने का प्रयास किया गया। जमींदारों, साहूकारों द्वारा झारखंडवासियों पर शोषण, अंग्रेजो का स्थाई बंदोबस्त कानून, कृषि संबंधी (झूम खेती पाबंदी) समस्याएं, वन कानून, जनजातीय परंपराओं में हस्तक्षेप के साथ ईसाई धर्म के विस्तार के प्रयास आदि कारणों से झारखंड में स्वभाविक क्रांति की मानसिकता जन्म लेने लगी व इस मानसिकता ने व्यापक क्रांति का रूप ग्रहण कर लिया। गहन अध्ययन से पता चलता है कि सभी स्थानों पर जनसाधारण की आवाज से ही वीर क्रांतिकारी जय मंगल पांडे, नादिर अली, राजा अर्जुन सिंह, भोक्ता भाई नीलांबर शाही और पितांबर शाही, ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव, जमादार माधव, पांडे गणपत राय, टिकैत उमराव सिंह, शेख भिखरी जैसे हजारों क्रांतिकारी उठे जिन्होंने क्रांति में अपनी महत्वपूर्ण सहभागिता दी है।

<u>साहित्य अवलोकन (**Literature Review**)</u>:

बी एल ग्रोवर, "आधुनिक भारत का इतिहास एक नवीन मूल्यांकन (1707 ई० से आधुनिक काल तक)", (2018), इस पुस्तक के अध्ययन से ईस्ट इंडिया कंपनी के भारत के दो प्रमुख कार्य का स्पष्ट व विस्तृत झलक देखने को मिलता है कि किस प्रकार ईस्ट इंडिया कंपनी अपने साम्राज्यवादी नीति तथा व्यापारिक शोषण नीतियों को अपनाकर उनके धनोलोलुपता की कोई सीमा न रही थी। वे शोषण नीति के संचित प्रभाव से सभी वर्गों, राज्यों के शासकों, सैनिकों, जमींदारो, कृषकों, ब्राह्मणों, मौलवियों पर प्रातिकूल प्रभाव डाला। इस पुस्तक के गहन अध्ययन से क्रांति के स्वरूप व चरित्र के विषय में भिन्न–भिन्न मत देखने को मिलता है। मगर इस पुस्तक के गहन अध्ययन से क्रांति के पीछे छिपे अनेक कारणों का स्पष्ट उल्लेख मिलता है जो शोधार्थी को तत्कालीन स्थिति को समझने में सहायक सिद्ध होगी।

विपिन चंद्र, की पुस्तक **"आधुनिक भारत का इतिहास"**, (2018), ने माना है की 1857 ई० में उत्तरी और मध्य भारत में एक शक्तिशाली जन विद्रोह उठ खड़ा हुआ और जिसने ब्रिटिश शासन की जड़ें हिला कर रख दी। इस पुस्तक में क्रांति के सामान्य कारणों को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। 1857 ई० की क्रांति के संदर्भ में कहा गया है कि विद्रोह

सिपाहियों के असंतोष का परिणाम मात्र नहीं था। वास्तव में, यह औपनिवेशिक शासन के चरित्र, उनकी नीतियां उन कारण कंपनी शासक के प्रति जनता के संचित असंतोष का और विदेशी शासक के प्रति उनकी विमुक्तता का परिणाम था। इस पुस्तक के गहन अध्ययन से ज्ञात होता है कि 1857 ई० के विद्रोह के दौरान शक्तिशाली हिंदू मुस्लिम एकता, सैनिक तथा जनता का पूरा–पूरा सहयोग था। वे चपातियों तथा लाल कमल के फूलों को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाते थे तथा घुमक्कड़, सन्यासियों, फकीरो, मदारियों आदि द्वारा प्रचार किया जाने का उल्लेख मिलता है। इस शोध रूपरेखा का उद्देश्य जनसाधारण की भागीदारी उल्लेख करना है। अतः यह शोधार्थी को अपने शोध कार्य में काफी सहायक होगी।

एस के पांडे, "आधुनिक भारत", (2014), इस पुस्तक से 1857 ई० की क्रांति के विभिन्न स्वरूपों को दर्शाया गया है। इस पुस्तक में क्रांति के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, तथा सैनिक कारणों के अंतर्गत गवर्नर जनरल **लॉर्ड वेलेस्ली** (1798–1805), **विलियम बेंटिक** (1828–35), **डलहौजी** (1848–56) के समय सती प्रथा (1829), बाल विवाह का निषेध (1860,1872,1891,1929) व विधवा पुनर्विवाह (1856) का समर्थन आदि करने से विवादों की विवेचना की गई है। उपरोक्त कारणों ने क्रांति में चिंगारी की तरह कार्य किया तथा विद्रोह का प्रसार मेरठ से प्रारंभ होते हुए 1857 ई० में देश के अन्य भागों में फैला। बिहार में शाहाबाद, पटना, गया, जगदीशपुर विद्रोह का प्रमुख केंद्र था। जिला शाहाबाद के जगदीशपुर से 80 वर्षीय **बाबू कुंवर सिंह** के नेतृत्व में आंदोलन किए गए व सर्वप्रथम शाहाबाद को अंग्रेजी राज से स्वतंत्र कराया। बाबू कुंवर सिंह के द्वारा आंदोलन की सूचना बिहार के दक्षिणी भाग में शीघ्र फैली। वह क्षेत्र आज के समय में **झारखंड** कहलाता है तथा इस क्षेत्र में 1857 ई० की क्रांति में जनसाधारण, मुसलमानों, पंडितों, आदिवासियों ने भी बढ़–चढ़कर निःस्वार्थ भाव से भाग लिया। इस शोध रूपरेखा का उद्देश्य 1857 ई० की क्रांति में झारखंड के जनसाधारण के संघर्ष व भागीदारी को समाज के सामने उजागर करना है। अतः यह शोधार्थी को अपने कार्य की रूपरेखा के उद्देश्य को स्पष्ट करने में सहायक सिद्ध होगी।

शेखर बंधोपाध्याय, "पलासी से विभाजन तक और उसके बाद (आधुनिक भारत का इतिहास)", (2019), यह शोधार्थी को तत्कालीन परिस्थितियों को समझने में सहायक होगी। उपरोक्त पुस्तकों की तरह इस पुस्तक में भी 1857 ई० की क्रांति की प्रकृति भिन्न–भिन्न काल में भिन्न–भिन्न इतिहासकारों, विद्वानों द्वारा भिन्न–भिन्न दर्शाने की कोशिश

की है जिसमें कुछ ने मुगल साम्राज्य की स्थापना के लिए एक मुस्लिम षड्यंत्र माना, तो कुछ ने मुख्यतः सैनिकों के असहमति का परिणाम था जिससें नागरिकों की भूमिका नगण्य माना। फिर भी इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि 1857 ई० की क्रांति एक भारतीय राष्ट्र की अवधारणा नहीं थी। किसानों की कार्रवाईयाँ स्थानीय घटनाएं थी जो सुस्पष्ट क्षेत्रीय सीमाओं में बंधी हुई थी।

बी विरोत्तम, "झारखंडः इतिहास एंव संस्कृति", (2017), इस पुस्तक से हमें 1857 ई० के स्वतंत्रता संग्राम में झारखंड के राजवंशो, सामंतों, आमजनों की भूमिका क्रांति के कारण, स्वरूप, प्रगति, दंड, पुरस्कार आदि का विस्तृत वर्णन मिलता है। 1857 ई० की क्रांति से पूर्व झारखंड में होने वाले विद्रोहों तथा 1857 ई० की क्रांति की पृष्ठभूमि को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। इस पुस्तक की गहन अध्ययन से ज्ञात होता है कि झारखंड क्षेत्र में अधिकांश जागीरदारों ने सरकार के विरूद्ध आम जनता का साथ दिया। क्रांति के लिए दंडित लोगों की लंबी सूची से यह ज्ञात होता है कि क्रांति में समाज के सभी वर्गों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया था जिससें सभी प्रकार के लोगों, जमींदारों से लेकर गांव के मुखिया, फकीरों, आदिवासीयों, मुसलमानों, पंडितों का एक ही उद्देश्य था कि अंग्रेजी सरकार की समाप्ति हो। मानभूम, पलामू तथा आधुनिक राँची क्षेत्र में विद्रोह में बड़ी संख्या में जनसाधारण ने निःस्वार्थ भाव से शामिल होकर इस विद्रोह को जन विद्रोह के रूप में बदल दिया। झारखंड में 1857 ई० की क्रांति में जनसाधारण की भूमिका का अध्ययन करना इस शोध रूपरेखा का उद्देश्य भी है। इस प्रकार यह पुस्तक शोध कार्य हेतु ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी।

राम कुमार तिवारी, "झारखंड की रूपरेखा", (2019), इस पुस्तक में झारखंड के इतिहास भूगोल, जनजातियाँ एवं राजकीय व्यवस्था आदि का संपूर्ण वर्णन एक साथ किया गया है जिसके अंतर्गत हमें झारखंड के संदर्भ में भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 ई० के राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक कारणों व राजवंशो, जनजातियों, आमजनों, मुसलमानों, गांव के मुखिया आदि की भूमिका का आकलन देखने को मिलता है। झारखंड क्षेत्र में हजारीबाग, रांची, चाईबासा, पुरुलिया, पलामू, सिंहभूम व संथाल परगना के सैनिकों के साथ–साथ राजा, जागीरदार, जनसाधारण, आदिवासी, मुसलमान, पंडित आदि से लेकर गांव के मुखिया इस क्रांति के साथ जुड़े थे। 1857 ई० की क्रांति में झारखंड के जनसाधारण की भूमिका का अध्ययन करना इस शोध रूपरेखा का उद्देश्य भी है। इस प्रकार यह पुस्तक शोध कार्य में सहायक रहेगी।

शशि भूषण चौधरी की पुस्तक **"सिविल रिबेलियन इन द इंडियन म्युटनीज (1857–59)"**, (1957), के अध्ययन से 1857 ई० की क्रांति के तात्कालिक स्थिति से अवगत होते है। झारखंड में कंपनी शासन की गड़बड़ी, स्थानीय लोगों के प्रति सरकारी अधिकारियों के दोषपूर्ण एवं अन्यायपूर्ण दृष्टिकोण, झारखंड के जनजातियों की वास्तविक शिकायतें आदि के विषय में हमें ज्ञान प्राप्त होता है। इस पुस्तक में 1857 ई० के क्रांति के स्वरूप को जन समर्थक पर आधारित क्रांति मानते हुए लिखा हैं कि प्रत्येक वर्ग के लोगों पर सरकार संदेह कर रही थी क्योंकि अधिकारियों ने देखा कि यह एक जन आंदोलन था जिसे दबाना उनके लिए जरूरी था। इस शोध रूपरेखा का विषय झारखंड में 1857 ई० की क्रांति में जनसाधारण की भागीदारी का आकलन करना है अतः यह पुस्तक इस शोध विषय के लिए अति महत्व रखता है।

समस्या का शोध अन्वेषण (Problem to be Investigated):

- झारखंड में अंग्रेजी कंपनी का प्रवेश 1767 ई० में शुरू हुई तथा 1837 ई० में सिंहभूम के कोल्हान क्षेत्र पर अपनी निश्चित सत्ता स्थापित करने में सफल हुई, परंतु छोटानागपुर, पलामू, हजारीबाग, मानभूम, संथाल परगना आदि क्षेत्रों पर अंग्रेजी कंपनी की सत्ता जल्द ही स्थापित हो गई, जहां स्थिति सामान्य नहीं रही व छोटे–बड़े रूप से कंपनी सरकार के विरूद्ध असंतोष की मानसिकता जन्म लेती गई। (विरोत्तम, 2017, 131)[10]। अंग्रेजी कंपनी के शासन के विरूद्ध व्यापक असंतोष के विभिन्न कारण, क्रांति की पृष्ठभूमि, तत्कालिक परिस्थितियों व कारणों के विश्लेषण हेतु शोध की आवश्यकता है।
- भारत पर ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना होने के पश्चात भारतीय जनता को नियंत्रित करने के प्रयास में नए–नए कानून को लागू करने का प्रयास किया गया। भूमि कर, वन कानून आदि से भारतीय जनता का आर्थिक शोषण किया गया। **विलियम बैंटिक** (1828–35), **डलहौजी** (1848–56), के समय सती प्रथा, कन्या वध, बाल विवाह की प्रथा की समाप्ति तथा विधवा पुर्नविवाह का समर्थन से हिंदू समाज के लिए अन्याय सहन कर पाना कठिन हो गया। अंग्रेज भारत में ईसाई धर्म को स्थापित करने के होड़ में कई कानून बनाए जाने लगे जो भारतीय के लिए शारीरिक तथा राजनीतिक उत्पीड़न सहन कर पाना कई बार संभव लगता है मगर धार्मिक उत्पीड़न को सहना कठिन हो जाता है। **मेजर एडवर्ड** ने स्पष्ट रूप से कहा था भारत पर हमारे अधिकार का अंतिम उद्देश्य देश

को ईसाई बनाना है। (ग्रोवर, 2018, 190)[1]। **लॉर्ड वेलेस्ली** (1798–1805) की सहायक संधि प्रणाली को अंतिम रूप डलहौजी के व्यपगत सिद्धांत ने पूरा किया। इस विलय की नीति ने सभी राजाओं को बेचैन कर दिया। ईस्ट इंडिया कंपनी की सरकार द्वारा लागू किये गये राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और धार्मिक कानूनों से प्रभाव को व्यापक रूप में विश्लेषण हेतु शोध कार्य आवश्यक बन जाता है।

- 1857 ई० की क्रांति का मुख्य केंद्र दिल्ली, मेरठ, अवध, कानपुर, झाँसी, फैजाबाद, जगदीशपुर, पटना आदि को माना जाता है। परंतु झारखंड भी इस लहर से अछूत न रहा। 12 जून, 1857 ई० देवघर जिला के रोहिणी गाँव की घटना ने एक नया मोड़ प्रदान किया। कुछ समय पश्चात शाहाबाद के बाबू कूंवर सिंह के विद्रोह की सूचना मिलते ही यह लहर हजारीबाग, रांची, चाईबासा, पुरुलिया, पलामू, सिंहभूम, संथाल परगना स्थित सैनिकों के बीच सूचना फैल गई। साथ में राजा, जागीरदार, आमजनता के साथ आदिवासी, मुसलमान से लेकर गाँव के मुखिया लोग भी जुड़ गए। (तिवारी, 2019, 190)[11]। अतः झारखण्ड में क्रांति के विस्तार को रेखांकित करने हेतु एक व्यापक विश्लेषणात्मक अध्ययन की आवश्कता है।
- 1857 ई० के महान क्रांति में समाज के प्रायः सभी वर्गों ने भाग लिया तथा उनके नेताओं का आज भी गुणगान किया जाता है परंतु झारखंड में किसान, सिपाही, मौलवी, पंडित, आदिवासी जनता के बीच से वीर क्रांतिकारी उभरे तथा उन्होंने अपना महत्वपूर्ण योगदान व बलिदान दिया है। जैसा कि (विरोत्तम, 2017, 276)[10] लिखते हैं कि वस्तुतः झारखंड के आंदोलन ने राष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण कर लिया था। इस क्षेत्र के इतिहास में पहली बार अधिकांश जागीदारों ने सरकार के विरुद्ध सामान्य जन का साथ दिया। विद्रोह के लिए दंडित लोगों की लंबी सूची यह सिद्ध करती है कि इस विद्रोह से समाज के सभी वर्ग प्रभावित हुए थे और यह विद्रोह केवल सैनिकों तक सीमित नहीं था। अतः इस विषय पर शोध आवश्यक हो जाता है ताकि उन गुमनाम क्रांतिकारियों को इतिहास में सम्मानजनक स्थान मिले व युवा पीढ़ी उनके बलिदानों से अवगत हो सके।
- 1857 ई० की क्रांति से भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को गहरा धक्का लगा था। क्रांति के उपरांत (1858 ई०) में ब्रिटिश संसद द्वारा प्रशासन की बागडोर ब्रिटेन के सम्राट को सौंपा। इससे पूर्व भारत पर शासन की बागडोर

कंपनी के डायरेक्टरों तथा बोर्ड ऑफ कंट्रोल के हाथ थी। (चंद्र, 2018, 149)[2] क्रांति के उपरांत प्रशासनिक परिवर्तन, क्षेत्रों के सीमा विस्तार की समाप्ति, सेना में परिवर्तन, भारतीय राजवाड़े को यथास्थिति बने रहने, भारतीयों के धार्मिक एवं सामाजिक मामलों में हस्तक्षेप न करना आदि महत्वपूर्ण घोषणा की गई। भारत में बेहतर शासन संचालन हेतु कानून पारित कर महारानी विक्टोरिया को ब्रिटिश भारत की महारानी घोषित किया गया। यह कानून 1 नवंबर से लागू होना था और उस दिन महारानी ने एक घोषणा जारी की जिसने धार्मिक संस्था का वादा किया और भारत पर उसके स्थापित रीति रिवाज के अनुसार शासन का प्रस्ताव किया। (बंधोपाध्याय, 2019, 179)[5]। उपरोक्त नीति के प्रभाव का विश्लेषण हेतु शोध कार्य की आवश्यकता है।

- 1857 ई० की क्रांति के समय शक्तिशाली हिंदू मुस्लिम एकता देखा गया था। एक वरिष्ठ ब्रिटिश अधिकारी **एचिसन** ने लिखा है, इस मामले में हम मुसलमानो को हिंदुओं से नहीं लड़ा सकते। (चंद्र, 2018, 141)[2]। वे गाँव में चपातियां तथा लाल कमल के फुलों को पहुंचाते थे, घुमक्कड़ सन्यासियों, फकीरों तथा मदारियों द्वारा क्रांति का प्रचार करते थे। क्रांतिकारियों के मध्य होने वाले संवाद, क्रांति का प्रचार, गुप्तचर संगठन, लोकगीत, युद्ध पद्धतियां के विषय में ज्ञान का अभाव पाया गया है। अतः इस पर शोध की आवश्यकता है।

<u>शोध का उद्देश्य (Research Objective):</u>

- कोई भी घटना यूं ही घटित नहीं होती। उनके अनेक कारण होते है। झारखंड में 1857 ई० के क्रांति घटित होने के पूर्व अनेक घटना व तात्कालिक घटनाओं के संदर्भ में गहन अध्ययन कर कारणों का विश्लेषण करना है।
- झारखंड में ईस्ट इंडिया कंपनी सरकार ने सत्ता स्थापन के साथ अनेक नए–नए सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक बदलाव किये जो यहां के अनुकूल न थे तथा इन नवोन्मेषणों के कारण आम जनजीवन के ऊपर पड़ने वाले प्रभावों का गहन अध्ययन कर स्थिति को उजागर करना है।
- 1857 ई० की क्रांति न केवल केंद्र स्थानों तक सीमित थी। अपितु भारत के दूरस्थ क्षेत्रों को भी प्रभावित किया। झारखंड भी इस लहर से अछूत न रहा, देवघर जिला के रोहिणी गाँव से शुरुआत के साथ झारखंड में भिन्न–भिन्न क्षेत्र में

फैली। इस क्षेत्र को और अधिक रेखांकित करने हेतु अध्ययन करना आवश्यक है।

- 1857 ई० की क्रांति में भाग लेने वाले गुमनाम क्रांतिकारियों, शूरवीरों, जनसाधारण के योगदान को समाज के सामने उजागर करना है तथा इतिहास में उनको उचित स्थान दिलवाना है।
- 1857 ई० की क्रांति जिस जोश के साथ प्रारंभ हुई, वह उसी क्रम में समाप्त हो गई परंतु इस क्रांति में ईस्ट इंडिया कंपनी की विजय के साथ इनकी पराजय मानी जा सकती है क्योंकि अब शासन व्यवस्था ब्रिटिश संसद से संचालित होने लगी। साथ ही भारत में अनेक परिवर्तन किए गए जिस पर झारखंड के विशेष संदर्भ में गहन अध्ययन कर प्रमुख बदलावों का विश्लेषण करना है।
- 1857 ई० की क्रांति के दौरान क्रांति का प्रचार–प्रसार करने वाले विभिन्न संगठनों, प्रचार के माध्यमों क्रांति हेतु अपनाए गए विधियों को प्रकाश में लाना है।

शोध प्रश्न (Research Question):

- झारखंड में 1857 ई० की क्रांति के पूर्व घटित विद्रोहों के क्या–क्या कारण थे? क्रांति के तात्कालिक कारण कौन–कौन से थे?
- ईस्ट इंडिया कंपनी की नवोन्मेषणों के कारण झारखंड के आम जनजीवन के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक स्थिति पर किस प्रकार प्रभावित किया?
- 1857 ई० की क्रांति ने झारखंड के किन–किन क्षेत्रों को प्रभावित किया?
- झारखंड में कौन–कौन से वर्ग, 1857 ई० की क्रांति से तटस्थ रहे? कौन–कौन से वर्ग ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रति निष्ठावान बने रहे? क्रांति में जनसाधारण की क्या भूमिका रही?
- 1857 ई० की क्रांति के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी की सरकार के द्वारा झारखंड में कौन–कौन से बदलाव किए?
- ईस्ट इंडिया कंपनी की सरकार के द्वारा क्रांति की दमन में कौन–कौन से उपायों का प्रयोग किया?

शोध प्रविधि (Research Methodology):

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक एवं द्वितीय स्त्रोतों, तथ्यों एवं दस्तावेजों पर आधारित वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, विवेचनात्मक विधि का प्रयोग किया जाएगा। प्राथमिक स्त्रोत के अंतर्गत सभी प्रकार के अधिकारिक दस्तावेज, क्रांति कालीन रिपोर्ट्स, चित्र एवं नक्शे, सभी प्रकार के अभिलेखों तथा सामग्री विषय से संबंधित दस्तावेजों का प्रयोग किया जाएगा। क्रांति से जुड़े व्यक्तियों के वंशजों का साक्षात्कार के माध्यम से तथ्यों का संग्रहण किया जाएगा तथा प्रमुख घटना स्थलों का प्रत्यक्ष रूप से अध्ययन एंव क्षेत्र कार्य किया जाएगा। द्वितीय स्त्रोतों के अंतर्गत विषय संबंधित जरनल्स, आर्टिकल्स, साहित्य ग्रंथ, सामाचार पत्र (1. द बंगाल हुर्करू एंड क्रॉनिकल, 2. द इंग्लिशमेन) वेबसाइट आदि का प्रयोग किया जाएगा। इसमें 1857 ई० की क्रांति से जुड़े झारखंड के सभी राजवंशों, राजनेताओं, जागीरदारों, जनसाधारण आदि की भूमिका का विस्तृत वर्णन प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से किया जाएगा। द्वितीयक आंकड़ों के लिए प्रकाशित एवं अप्रकाशित दोनों स्त्रोतों, पुस्तकालयों (1. नेशनल लाइब्रेरी, कोलकाता, 2. खुदाबख्श ओरिएंटल लाइब्रेरी, पटना), इंटरनेट आदि का प्रयोग किया जाएगा।

प्रस्तावित कार्य का महत्व (Significance of Proposed Work):

झारखंड में ईस्ट इंडिया कंपनी की सरकार के आने के पश्चात व 1857 ई० की क्रांति से पूर्व झारखंड के निवासियों द्वारा बहुत से छोटे–बड़े आंदोलन चलाए गए थे वह आज भी स्थानीय, प्रांतीय व राष्ट्र्य स्तर पर प्रसांगिक है। प्रस्तुत शोध रूपरेखा के माध्यम से 1857 ई० की क्रांति के समय झारखंड राज्य की परिस्थितियों, क्रांति के तात्कालीक कारणों, ब्रिटिश कंपनी की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आदि नीतियां, क्रांति के प्रति सभी वर्गों की भूमिका का विश्लेषण किया जाएगा। अध्ययन से पता चलता है कि 1857 ई० की क्रांति का स्वरूप पूरे देश में एक जैसा नहीं था व कारण भी भिन्न–भिन्न पाया गया है। इस विषय पर पूर्व में भी कई शोध हो चुके हैं जिनका विषय 1857 ई० की क्रांति के परिणाम, घटनाक्रम, ब्रिटिश कंपनी की विफलता, राजवंशो के इतिहास, जागीरदारों की भूमिका आदि का विवरण को उजागर किया गया था। अनेक शोध पत्रों में 1857 ई० के क्रांति के प्रमुख क्रांतिवीर व वीरांगनांए जैसे रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, ताँत्या टोपे, नाना साहब, मंगल पांडे, बहादुर शाह जफर द्वितीय, वीर कुंवर सिंह आदि के योगदान से संबंधित ही रहे हैं। मेरा शोध पत्र 1857 ई० की क्रांति (झारखंड राज्य के विशेष संदर्भ में) लोगों को नई तरह से सोचने पर मजबूर कर देगी।

इस विषय में यह शोध एक नया मोड़ प्रदान करेगी। आज तक जो अज्ञात जनसाधारण, वीर नायक, गुमनाम क्रांतिकारी इस क्रांति में अपना योगदान दिए हैं तथा जिनका उल्लेख अभी तक ग्रंथों में नहीं हो पाया है उनके प्रति यह शोध एक श्रद्धांजलि अर्पित करेगी।

शोध की सीमाएं तथा भविष्य के कार्य (Research Limitation and Future work):

शोध प्रक्रिया एक व्यापक प्रक्रिया होती है, शोध की व्यापकता शोधार्थी को दिशाविहीन कर सकती है। इसलिए शोध कार्य को उसके अंतिम लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए शोध विषय की सीमाएं तय करना अति आवश्यक हो जाता है। प्रस्तावित शोध रूपरेखा का कार्य झारखंड में 1857 ई० की क्रांति से संबंधित सभी व्यक्तियों, स्थितियों, कारकों की भूमिका से जुड़े तथ्य तक सीमित है, शोध विषय से संबंधित प्राथमिक तथा द्वितीय स्त्रोतों के माध्यम से निष्कर्ष तक पहुंचकर शोध कार्य पूर्ण किया जा सके इसके लिए प्रस्तावित शोध के अध्ययन को झारखंड तक ही सीमित रखा जाने का प्रयास रहेगा। इसके अतिरिक्त झारखंड के विभिन्न क्षेत्रों (देवघर, हजारीबाग, राँची, पलामू) सहित समकालीन अथवा संबंधित क्रांतिकारियों के बारे में तथा उनके वंशजों के साक्षात्कार से तथ्य एकत्र किए जाएंगे। साथ ही क्रांति से संबंधित पत्रों, साहित्य ग्रंथों, लेख–अभिलेखों, इंटरनेट, निजी व सरकारी पुस्तकालयों से सूचनाएं एकत्र की जा सकेगीं जिससे शोध की वास्तविकता तथा वस्तुनिष्ठता तक पहुंचा जा सके।

दूसरी तरफ, प्रस्तावित शोध रूपरेखा को भावी पीढ़ी को समर्पित करने हेतु ग्रंथ का रूप प्रदान किया जाएगा ताकि इसका उपयोग अकादमिक रूप से किया जा सके। जो इतिहास में रुचि रखने वालों तथा इतिहास के छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। झारखंड में 1857 ई० की क्रांति से संबंधित किसी भी शोध कार्य के लिए यह शोध लाभदायक सिद्ध होगा। शोध कार्य के माध्यम से झारखंड के उन स्थानों में शोध का विस्तार किया जा सकेगा जो स्थान आज भी शोध कार्य से अछूत रहे हैं। क्रांति से संबंधित कारकों, स्थान, वीर नायक व जनसाधारण के संघर्ष तथा बलिदान को उभारा जाएगा। क्षेत्र विशेष के शोध कार्य हेतु शोधार्थियों की रुचि में वृद्धि होगी, जिससे शोध कार्य को बढ़वा मिलेगा।

<u>संभावित अध्यायीकरण (Tentative Chapterization)</u>:

प्रस्तुत शोध रूपरेखा "झारखंड में 1857 ई० की क्रांति में जनसाधारण की भूमिकाः एक ऐतिहासिक अवलोकन" को प्रमुख रूप से पाँच (5) अध्यायों में विभाजित किया गया हैः—

भूमिका

अध्याय 1. 1857 ई० की क्रांति के पूर्व व तात्कालिक असंतोष की पृष्ठभूमि

अध्याय 2. कंपनी सरकार का झारखंड राज्य की आम जनजीवन पर राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक प्रभाव

अध्याय 3. 1857 ई० की क्रांति का विस्तार झारखंड के विशेष संदर्भ में

अध्याय 4. झारखंड में 1857 ई० की क्रांति में जनसाधारण की भूमिका व सहभागिता

अध्याय 5. 1857 ई० की क्रांति के उपरांत प्रशासनिक बदलाव व झारखंड में इसके प्रभाव

उपसंहार

ग्रंथ सूची

<u>संदर्भ सूची (References)</u>:

1. ग्रोवर, बी० एल०, *"आधुनिक भारत का इतिहास एक नवीन मूल्यांकन (1707 ई० से आधुनिक काल तक)"*, एस चांद एंड कंपनी लिमिटेड, 2018, पृ० सं०— 183—198
2. चंद्र, वि०, *"आधुनिक भारत का इतिहास"*, ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड, 2018, पृ० सं०— 129—148
3. चंद्र, वि०, *"भारत का स्वतंत्रता संघर्ष "*, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2015, पृ० सं०— 1—20
4. पांडे, एस० के०, *"आधुनिक भारत"*, प्रयाग एकेडमी पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2014, पृ० सं०— 136—149
5. बंधोपाध्याय, एस०, *"पलासी से विभाजन तक और उसके बाद (आधुनिक भारत का इतिहास)"*, ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड, 2019, पृ० सं०— 159—179
6. गौतम पी० एल०, *"आधुनिक भारत का इतिहास एवं विरासत (1757—1964 ई०)"*, अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (पी) लिमिटेड, 2023, पृ० सं०— 275—292

7. सावरकर, वी० डी०, *"1857 का स्वातंत्र्य समर"*, प्रभाव प्रकाशन, दिल्ली, 2007, पृ० सं०— 259—357

8. मैलेसन, जी० बी०, *"हिस्ट्री ऑफ द इंडियन म्यूटिनी, 1857—1858"*, डब्ल्यू० एच० एलन, लंदन, 1879, पृ० सं०— 416—492

9. मैलेसन, जी० बी०, काये, जॉन, *"काये और मैलेसन का 1857—58 के भारतीय विद्रोह का इतिहास"*, लॉन्गमैन्स, ग्रीन एंड कंपनी, लंदन, 1909, पृ० सं०— 310—344

10. विरोत्तम, बी०, *"झारखंडः इतिहास एंव संस्कृति"*, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2017, पृ० सं०— 273—324

11. तिवारी, राम कुमार, *"झारखंड की रूपरेखा"*, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2019, पृ० सं०— 188—198

12. दत्त, के० के०, *"बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास"*, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2014, पृ० सं०— 01—78

13. चौधरी, शशि भूषण, *"भारतीय विद्रोह के सिद्धांत (1857—59)"*, द वर्ल्ड प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, कलकत्ता, 1965, पृ० सं०— 35—180

14. चौधरी, शशि भूषण, *"सिविल रिबेलियन इन द इंडियन म्युटनीज (1857—59)"*, द वर्ल्ड प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, कलकत्ता, 1957, पृ० सं०— 159—257